समुच्चय पूजन

रचयिता - ब्र. सरदारमलजी 'सच्चिदानंद' कृत

प्रस्तुति - तत्वचर्चा

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

स्थापना

देवशास्त्र गुरु नमन करि, बीस तीर्थङ्कर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूँ चित्त हुलसाय॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरु भगवन्तः, श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिनः, श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यः अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरु भगवंतेभ्यः, श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः, श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिनः, अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरु भगवंतेभ्यः, श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकराः, श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिनः अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(अष्टक)

अनादिकाल से जग में स्वामिन्, जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय-निधि को नहिं पहचाना॥
अब निर्मल रत्नत्रय जल ले, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्य:-श्रीविद्यमानविंशति तीर्थङ्करेभ्य: श्रीअनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

भव आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने में अब तक मैंने, पर में की झूठी ममता है॥
चन्दन सम शीतलता पाने, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्य: -श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य: – श्रीअनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

अक्षय पद बिन फिरा, जगत की-लख चौरासी योनी में।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिंग लाया मैं॥
अक्षयनिधि निज की पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेव शास्त्र गुरुभ्य: -श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य: – श्रीअनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

पुष्प सुगन्धी से आतम ने, शील स्वभाव नशाया है।
मन्मथ बाणों से बिंध करके, चहुँगति दुख उपजाया है॥
स्थिरता निज में पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्य: श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य: श्रीअनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

षटरस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शान्त हुई।
आतमरस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई॥
सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेव शास्त्र गुरुभ्य: श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य: श्रीअनन्तानन्त-
सिद्ध-परमेष्ठिभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जड़दीप विनश्वर को अब तक, समझा था मैंने उजियारा।
निज गुण दरशायक ज्ञान दीप से, मिटा मोह का अँधियारा॥
ये दीप समर्पण करके मैं, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्य: श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य: श्रीअनन्तानन्त-सिद्ध- परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी।
निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नशायेगी॥
उस शक्ति दहन प्रकटाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्य: श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य: श्री अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

पिस्ता बादाम श्रीफल लवंग, चरणन तुम ढिंग मैं ले आया।
आतमरस भीने निज गुण फल, मम मन अब उनमें ललचाया॥
अब मोक्ष महाफल पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्य: श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यः श्रीअनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निज गुण प्रकट किये॥
ये अर्घ्य समर्पण करके मैं,श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्य: श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य: श्रीअनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्योऽनर्घपद प्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

जयमाला

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु भगवान।
अब वरणूँ जयमालिका, करूँ स्तवन गुणगान॥

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(भुजंगप्रयात)

नसे घातिया कर्म अर्हन्त देवा,
करें सुर-असुर नर-मुनि नित्य सेवा।
दरश ज्ञान सुख बल अनन्त के स्वामी,
छियालीस गुण युक्त महाईश नामी॥

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(भुजंगप्रयात)

तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी,
महा मोह विध्वंसिनी मोक्ष – दानी ।
अनेकान्तमय द्वादशांगी बखानी,
नमो लोक माता श्री जैन वाणी ॥

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(भुजंगप्रयात)

विरागी अचारज उवज्झाय साधू,
दरश-ज्ञान भण्डार समता अराधू।
नगन वेशधारी सु एका विहारी,
निजानन्द मण्डित मुकति पथ प्रचारी॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(भुजंगप्रयात)

विदेह क्षेत्र में तीर्थङ्कर बीस राजे,
विहरमान वन्दूँ सभी पाप भाजे।
नमूँ सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी,
अनाकुल समाधान सहजाभिरामी॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्य: -श्रीविद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य: –
श्रीअनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो जयमाला महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर,
सिद्ध हृदय बिच धर ले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके,
भव सागर जिय तर ले रे॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्